ISSN: 3107-3557 (Online)

डॉ.राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों की उपयोगिता : वर्तमान संदर्भ में

Dr. B. J. Patel
Associate Professor in Hindi
Smt. B. V. Dhanak College, Bagasara

डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय दार्शनिक एवं शैक्षिक विद्वानों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। शिक्षा के प्रति वे पूर्ण समर्पित भाव रखते थे। डॉ.राधाकृष्णन एक महान भारतीय फिलोसोफर (दार्शनिक), एजुकेशनिस्ट (शिक्षक) और पोलिटिशियन (राजनेता) थे। उनका जन्म 5 सितंबर 1888 को तमिलनाडु के तिरुत्तनी गाँव में हुआ था। उन्हें अपनी मेधावी प्रतिभा के कारण भारत के पहले उपराष्ट्रपति और देश के दूसरे राष्ट्रपति के पद पर आसीन होने का सद्भाग्य मिला था। राधाकृष्णन एक साधारण परिवार से थे, लेकिन उनकी शिक्षा और विचारों ने उन्हें महान और शिक्षक विद्वान बना दिया। डॉ.राधाकृष्णन एक सफल राजनेता एक कुशल राजनयिक और उत्कृष्ट वक्ता तो थे ही, पर इन सबसे ऊपर वे एक उच्च कोटि के शिक्षक थे । एक शिक्षक के रूप में उन्होंने अपने जीवन के बहुमूल्य चालीस साल बिताए। अपनी आध्यात्मिक दृष्टि एवं निजी वैचारिकता से वे मानव समुदाय के लिए आवश्यक शैक्षिक उत्कर्ष के लिए सतत प्रयत्नशील रहे। 5 सितम्बर को शिक्षक दिन के रूप में मनाकर हम प्रत्येक भारतीय सम्मान के साथ उन्हें याद करते हैं। पूर्व राष्ट्रपति डॉ.राधकृष्णन हमारे युग के एक महान विचारक और दार्शनिक थे। भारतीय विचार-परम्परा के मूर्धन्य व्याख्याता और तत्त्व-चिन्तक के रूप में संसार के बौद्धिक क्षेत्रों में उन्हें बड़े सम्मान का स्थान प्राप्त है। उनकी पांडित्य पूर्ण रचनाओं ने आधुनिक विचार-जगत को गहराई से प्रभावित किया है ।1 डॉ.राधाकृष्णन ने भारतीय एवं पाश्चात्य विचारों की तुलना एवं समीक्षा के आधार पर दार्शनिक संरचना का सतत प्रयत्न कर पूर्व तथा पश्चिम के बीच सेतु बनाने का प्रयास किया इसी कारण से उन्हें पूर्व और पश्चिम का संपर्क अधिकारी भी कहा जाता है। "वे धर्म, दर्शन और राजनीति का ऐसा सुगम और मधुर विश्लेषण करते थे कि अल्पविवेक श्रोता भी उनकी बातें समझ लेते थे।"2 उन्होंने दार्शनिकता और शिक्षा का ऐसा सामंजस्य स्थापित किया कि सभी विद्वत्जन उनके विचारों की भरपूर प्रशंसा करते हैं। एक उच्च दर्जे के अध्यापक होने के नाते उन्होंने सदैव पूरे संसार का भला ही चाहा।

डॉ.राधाकृष्णन शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया मानते हैं-जिसमें मानव शिक्षक से सीखता है, स्वयं सीखता है, जीवन तथा उसके अनुभवों से सीखता है, प्रत्येक क्षण, प्रत्येक कदम पर सीखता है। अपने घर, समुदाय, पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य इलैक्ट्रानिक तकनीकियों के माध्यम से सीखता है । इस प्रकार यह सतत रूप से आजीवन सीखता रहता है। दूसरे शब्दों में डॉ.राधाकृष्णन के अनुसार-"सम्पूर्ण जीवन अनुभव है। इसका कारण शिक्षा है।"3 उन्होंने अनुभवजन्य ज्ञान को सविशेष महत्त्व दिया । डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन के दार्शनिक विचार जो मुख्य रूप से अद्वैत वेदांत पर आधारित थे-शिक्षा, धर्म और समाज पर केंद्रित थे । उनकी दार्शनिकता, प्राचीन भारतीय ज्ञान पर आधारित एक नई व्यवस्था में दृढ़ विश्वास रखती थी और वेदों, उपनिषदों और गीता से प्रेरणा ग्रहण करती थी। राधाकृष्णन जी मानते थे कि चिन्तनशील ज्ञान के द्वारा हम यथार्थता के द्वार तक पहुँचते तो हैं, किन्तु केवल विचार के सहारे हम सत्य में प्रवेश नहीं कर सकते । सम्पूर्ण मानवीय प्रकृति की पूर्णता द्वारा ही उस तक पहुँचा जा सकता है।4 उनका

मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति और समाज दोनों का निर्माण करना है और शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का साधन माना जाना चाहिए। उन्होंने हमेशा से अनुभव किया कि पुस्तकें हमारे सम्मुख जीवन के रहस्य खोलतीं तथा भव्य स्वप्न उपस्थित करती हैं। यही कारण था कि प्रारंभ से ही उनका पुस्तकों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। वैसे तो शिक्षा प्रचार-प्रसार को लेकर सभी विद्वान प्रयत्नशील रहे हैं। कविवर निराला जी मानते हैं कि संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सबसे बढ़कर है।5 तो प्रेमचंद कहते हैं-"कभी-कभी उन लोगों से शिक्षा मिलती है, जिन्हें हम अभिमान वश अज्ञानी समझते हैं।6 स्वामी विवेकानंद और महात्मा गांधी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए राधाकृष्णन ने अपने शिक्षा दर्शन को विकसित किया है। महात्मा गांधी के अनुसार हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें 'हेड', 'हार्ट' एण्ड 'हैंड' अर्थात् मस्तिष्क, हृदय और हाथ का समुचित उपयोग हो। मतलब यह कि शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान, विवेक और कौशल को विकसित करना होना चाहिए। ज्ञान जब सघन होता है, तो विवेक में बदल जाता है।

डॉ.राधाकृष्णन जी का शिक्षा सम्बन्धी स्पष्ट मत था कि शिक्षा को जीवन से पृथक् नहीं किया जा सकता इसलिए शिक्षा जीवन के अनुसार ही होनी चाहिए अर्थात् शिक्षा मनुष्य एवं प्रकृति से संबंधित होनी चाहिए; जबकि वर्तमान में शिक्षा का जीवन से कोई तालमेल नहीं है सिर्फ किताबी ज्ञान को ही शिक्षा माना जा रहा है। विद्यार्थी की शिक्षा प्राकृतिक ढंग से होनी चाहिए, इससे विद्यार्थी और प्रकृति एवं वातावरण के बीच सामंजस्य स्थापित होगा और विद्यार्थी वास्तविक जीवन या संसार का ज्ञान प्राप्त कर सकेगा। जबकि वर्तमान में विद्यार्थी को चारदीवारी विद्यालयों में बंद कर शिक्षा के नाम पर औपचारिकता निभाई जा रही है। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिए क्योंकि मातृभाषा द्वारा ही सम्पूर्ण राष्ट्र को अच्छी तरह शिक्षित किया जा सकता है और जीवन के अनन्त मूल्यों की प्राप्ति की जा सकती है। वर्तमान में जो पब्लिक स्कूलों में जो शिक्षा दी जा रही है उसमें न केवल उच्च शिक्षा बल्कि प्राथमिक शिक्षा भी अंग्रेजी माध्यम में दी जा रही है। वर्तमान शिक्षा के पाठ्यक्रम का ढाँचा इस तरह से होना चाहिए कि उसमें आदर्शों, परम्पराओं, प्रथाओं और रीति-रिवाजों को समुचित स्थान दिया जाए। शिक्षार्थी और शिक्षक संबंध पिता/माता-पुत्र/पुत्री तुल्य तथा शैक्षिक विधियाँ मनोवैज्ञानिक तकनीकों पर आधारित होनी चाहिए। डॉ.राधाकृष्णन जी ने शिक्षा का केन्द्र विद्यार्थी को माना है, अतः विद्यार्थी में नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यावसायिक आदि मूल्यों का संचरण करने का प्रयास करना चाहिए।

डॉ.राधाकृष्णन के धार्मिक, आध्यात्मिक तथा प्रगतिवादी विचार छात्रों के व्यावहारिक क्षितिज को उन्नत करने के साथ उन्हें एक स्वस्थ नागरिक बनाने की दिशा में मददगार होते हैं। डॉ.राधाकृष्णन अग्रीम पंक्ति के दार्शनिक के अलावा एक महान शिक्षाशास्त्री भी हैं, जिन्होंने सदैव भारतीय संस्कृति की गरिमा बढ़ाने का कार्य किया। उनके विचार चाहे बीसवीं शताब्दी हो या इक्कीसवीं शताब्दी चहुदिशी उपयोगी-प्रभावी-उत्प्रेरक प्रतीत होते हैं। इक्कीसवीं शताब्दी की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था विशेष रूप से वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में डॉ.राधाकृष्णन के विचारों से अधिक दिशा निर्देश प्राप्त करने हेतु अपेक्षित हैं। डॉ.राधाकृष्णन जी के हमेशा प्रयास रहे हैं कि शिक्षा को कैसे बेहतर बनाया जाए! उन्होंने लिखा है-"जितने समय मैं विद्यार्थियों के साथ रहता था मैं हृदय से यही प्रयत्न करता था कि वे आध्यात्मिक तथा

नैतिक संसार में विश्वास करना सीख जाए। ++ ++ ++ कुछ समय मौन रखना हृदय और आत्मा को पवित्र बनाना और आत्मा से बातें करना-इन चीजों के प्रति विद्यार्थी के हृदय में अनुराग उत्पन्न करना आवश्यक है। ऐसा करने से वे अपने विचारों का स्मरण कर सकेंगे, अपने स्वरूप को पहचान सकेंगे तथा अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सकेंगे।"7 हम यहाँ महात्मा गाँधीजी की बात उद्धृत कर रहे हैं, क्योंकि हमें यह अनुभव अवश्य होगा कि डॉ.राधाकृष्णन और गाँधीजी की बातों में कितना साम्य है-"आत्मा की कसरत शिक्षक के आचरण द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। अतएव युवक हाजिर हों चाहे न हों, शिक्षक को सावधान रहना चाहिए। लंका में बैठा हुआ शिक्षक भी अपने आचरण द्वारा अपने शिष्यों की आत्मा को हिला सकता है। मैं स्वयं झूठ बोलूँ और अपने शिष्यों को सच्चा बनाने का प्रयत्न करूँ, तो वह व्यर्थ ही होगा। डरपोक शिक्षक शिष्यों को वीरता नहीं सिखा सकता। व्यभिचारी शिक्षक शिष्यों को संयम किस प्रकार सिखाएगा ? मैंने देखा कि मुझे अपने पास रहनेवाले युवकों और युवतियों के सम्मुख पदार्थ पाठ-सा बनकर रहना चाहिए। इस कारण मेरे शिष्य मेरे शिक्षक बने। मैं यह समझा कि मुझे अपने लिए नहीं, बल्कि उनके लिए अच्छा बनना और रहना चाहिए। अतएव कहा जा सकता है कि टॉलस्टॉय आश्रम का मेरा अधिकतर संयम इन युवकों और युवतियों की बदौलत था।8 शिक्षा के क्षेत्र में इसी संयम की बात डॉ.राधाकृष्णन जी भी करते हैं।

मनुष्य के पूर्णत्व के लिए यह अपेक्षित है कि हम एक ऐसे समाज का निर्माण करें, जहाँ प्रत्येक प्राणी में एक दूसरे के प्रति प्रेम और श्रद्धा हो और पुनर्जीवित मानवता को निष्काम सेवा का भाव हो। अगर हम इस संसार में व्यवस्था और न्याय का राज्य देखना चाहते हैं तो आत्मा को आन्तरिक शान्ति प्राप्त करने के योग्य बनाना होगा अगर आत्मिक अशिक्षा वर्तमान है तो केवल शारीरिक योग्यता और मानसिक सतर्कता दोनों घातक हैं। अगर आत्मिक जीवन नष्ट हो जाता है तो प्रगति का कोई अर्थ नहीं रहता । मनुष्य अपने जीवन का भौतिक आवश्यकताओं के अनुकूल किस प्रकार निर्माण कर सकता है इसका एक चित्र एल्डस हक्सले की पुस्तक "ब्रेव न्यू वर्ल्ड" (Brave New World) में मिलता है। परन्तु ऐसे जीवन में सृजन-कार्य प्रयोगशाला की बोतलों में होगा और पारिवारिक जीवन, कला और साहित्य, दर्शन और धर्म और सभी आध्यात्मिक बातों का कोई स्थान नहीं होगा । हमारी सभ्यता पर आज जो संकट छाया हुआ है, उसका कारण यही है कि हमने अपने नैतिक और आध्यात्मिक आदर्शों में शिथिलता कर दी है। डॉ.राधाकृष्णन जी सभ्यता के विकास का लक्षण सच्चाई को मानते हैं, वही बात गाँधीजी ने भी कही थी । सच्चाई के साथ ईमानदारी और स्वार्थहीनता में वृद्धि भी जरूरी है। यह सब समुचित शिक्षा से ही संभव हो पाएगा । डॉ.राधाकृष्णन जी के यही विचार उन्हें महामानव बनाते हैं। हम यहाँ गुजराती भाषा की एक छोटी-सी पुस्तक का भावानुवाद रखना चाहेंगे-"उस समय स्वामी विवेकानंद अमरीका गए थे। वहाँ उन्होंने हिन्दू धर्म और वेदांत पर प्रवचन दिए और अपनी प्रखर विद्वत्ता तथा वक्तृत्व-शक्ति से पश्चिमी देशों में हिन्दू धर्म और भारत का गौरव बढ़ाया। विवेकानंद को इस तरह से पश्चिमी जगत में जो यश मिला उससे भी राधाकृष्णन की हिन्दू धर्म और संस्कृति पर आस्था अधिक दृढ़ हुई । विवेकानंद के भारत लौटने पर उन्होंने उनके प्रवचन सुने। इनमें से भी उन्हें विशेष प्रेरणा मिली। दर्शनशास्त्र के प्रति अपनी अभिरुचि के परिणाम स्वरूप राधाकृष्णन कविवर रविंद्रनाथ टैगोर के प्रति भी

आकर्षित हुए। उन्होंने इनकी ज्यादातर पुस्तकें पढ़ लीं और उसका गहराई से अभ्यास किया। इसके पश्चात सन् 1918 ई. में उन्होंने 'रविंद्रनाथ का दर्शन' नामक किताब प्रकाशित की।9

डॉ.राधाकृष्णन का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान अद्वितीय और सराहनीय है। उन्होंने अपने जीवन की शुरुआत एक शिक्षक तौर पर की थी वे भलीभांति समझते थे कि शिक्षा का मनुष्य के जीवन में कितना महत्त्व होता है । वे एक महान दार्शनिक थे, परंतु जीवन को आम आदमी की तरह बहुत करीब से देखा था । शिक्षा सामाजिक रूप से मुक्ति का एक महान साधन है । यह कहा जा सकता है कि शिक्षा जाति, धर्म, लिंग, व्यवसाय और आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना समान स्वतंत्रता और समान अधिकारों की भावना को स्थापित और संरक्षित करती है। शिक्षा के क्षेत्र में डॉ.राधाकृष्णन ने जो अमूल्य योगदान दिया वह सदैव ही स्मरणीय है । वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी, जाने-माने विद्वान, शिक्षक, वक्ता, प्रशासक, राजनयिक, देशभक्त और शिक्षा शास्त्री थे; तथापि अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में अनेक उच्च पदों पर काम करते हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में सतत योगदान देते रहे । उनकी मान्यता थी कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाए तो समाज के अध:पतन को रोककर समाज की अनेक बुराइयों को मिटाया जा सकता है । मात्र जानकारियाँ देना ही शिक्षा नहीं है। जानकारी का अपना महत्त्व है और आधुनिक युग में तकनीकी जानकारी महत्त्वपूर्ण भी है तथापि व्यक्ति के बौद्धिक झुकाव और उसकी लोकतांत्रिक भावना का भी बड़ा महत्त्व है। ये बातें व्यक्ति को एक उत्तरदायी नागरिक बनाती है । शिक्षा का लक्ष्य है ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और निरंतर सीखते रहने की प्रवृत्ति । वह एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को ज्ञान और कौशल दोनों प्रदान करती है तथा इनका जीवन में उपयोग करने का मार्ग प्रशस्त करती है। करुणा, प्रेम और श्रेष्ठ परंपराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य हैं । वे कहते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता और शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता तब तक अच्छी शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती । महात्मा गांधीजी ने विद्यार्थी जीवन के खुद के अनुभव को साझा करते हुए लिखा है –"मेरा ख्याल है कि शिक्षक ही विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तक है। मेरे शिक्षकों ने पुस्तकों की मदद से मुझे जो सिखाया था, वह मुझे बहुत ही कम याद रहा है। पर उन्होंने अपने मुँह से जो सिखाया था, उसका स्मरण आज भी बना हुआ है। बालक आँखों से जितना ग्रहण करते हैं, उसकी अपेक्षा कानों से सुनी हुई बात को वे थोड़े परिश्रम से और बहुत अधिक मात्रा में ग्रहण कर सकते हैं।"10 यहाँ यह ध्यातव्य है कि उन्होंने अनेक वर्षों तक अध्यापन कार्य करते हुए गाँधीजी की उपर्युक्त मान्यता को चरितार्थ किया था।

यहाँ जे.कृष्णमूर्ति के यह विचार दृष्टव्य है, जहाँ पर डॉ.राधकृष्णन के विचारों की भी साम्यता दृष्टिगत होती है। अतः शिक्षा का अर्थ क्या यह नहीं है कि इन सभी समस्याओं का सामना करने के लिए वह आपको समर्थ बनाए। यह आवश्यक है कि इन सभी समस्याओं का ठीक ढंग से सामना करने के लिए आपको शिक्षित किया जाए। यही शिक्षा है, न कि मात्र कुछ परीक्षाएं पास कर लेना, कुछ बेहूदा विषयों का जिनमें आपकी रुचि बिलकुल नहीं है, उनका अध्ययन कर लेना। सम्यक शिक्षा वही है जो विद्यार्थी की इस जीवन का सामना करने में मदद करे, ताकि वह जीवन को समझ सके, उससे हार न मान ले, उसके बोझ से दब न जाए, जैसा कि हममें से अधिकांश लोगों के साथ होता है। लोग, विचार, देश, जलवायु, भोजन,

लोकमत, यह सभी कुछ लगातार आपको उस खास दिशा में ढकेल रहे हैं, जिसमें कि समाज आपको देखना चाहता है। आपकी शिक्षा ऐसी हो कि वह आपको इस दबाव को समझने के योग्य बनाए, इसे उचित ठहराने के बजाय आप इसे समझें और इससे बाहर निकलें जिससे कि एक व्यक्ति होने के नाते, एक मनुष्य होने के नाते, आप आगे बढ़कर कुछ नया करने में सक्षम हो सकें और केवल परंपरागत ढंग से ही विचार करते न रह जाएं। यही वास्तविक शिक्षा है।11

डॉ.राधाकृष्णन का शिक्षा के प्रति समर्पित भाव अद्वितीय था। जैसा कि हमें ज्ञात है-भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा, ज्ञान और विद्या का अलग-अलग निहितार्थ समझा गया है। इसी अर्थ में विद्या को-"सा विद्या या विमुक्तये" कहा गया है। मतलब वह विद्या जो हमें सांसारिक प्रपंच क्रोध, लोभ, द्वेष और घृणा से मुक्त कर पारलौकिक सत्ता से हमारा संबंध स्थापित करने में मदद करें। इसलिए हमारे शास्त्रों में कहा गया है- "विद्या गुरुणां गुरु: ।" 'गु' का अर्थ है अंधकार और 'रु' का अर्थ है दूर करना। अंधकार सिर्फ बौद्धिक अज्ञानता का ही नहीं होता, बल्कि आध्यात्मिक अज्ञानता का भी होता है और जो आध्यात्मिक अज्ञानता को दूर करने में सक्षम हो, उसे गुरु कहा जाता है। एक गुरु का परम कर्तव्य है कि वह अपने शिष्यों में छिपी प्रतिभा, कौशल और योग्यता को उद्घाटित करें, उसे निखार और संवार दें। हम यहाँ यह लिखते हुए बड़े गौरव का भाव अनुभूत कर रहे हैं कि विद्यार्थियों को एक परम आदरणीय एवं कर्तव्यनिष्ठ गुरु के रूप में डॉ.राधाकृष्णन मिले हैं। डॉ.राधाकृष्णन कहते हैं कि- वह जिस विषय को पढ़ाता है, उसमें तो उसे महारत हासिल होनी ही चाहिए, अपने विषय में हो रहे नए अनुसंधान और विमर्शों से भी उसे जुड़े रहना चाहिए। ताकि वह ज्ञान की खोज यात्रा का सहयात्री बन सके। एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो अपने विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार कर सकें। आचार्य पतंजलि ने विद्या को तब तक उपयोगी नहीं माना है जब तक वह चार प्रक्रियाओं अर्थात् अध्ययन, मनन, प्रवचन और प्रयोग की कसौटी पर खरा न उतरें। इस प्रसंग में आचार्य विद्यानिवास मिश्र का यह कहना सर्वथा उचित प्रतीत होता है कि शिक्षा केवल अक्षर की ही नहीं होती, हर एक कौशल की, हर एक कला की होती है और सिखाने वाला जरूरी नहीं केवल साक्षर व्यक्ति ही हो। पंडित जी आगे लिखते हैं कि गुरु रास्ता बनाता है, मार्ग बनाता है। शिष्य से यह नहीं कहता कि उसी मार्ग पर तुम चलो। वह कहता है कि ऐसा मार्ग तुम भी बनाओ। तुम अपनी देशीय-कालिक परिवेश, परिस्थिति व शक्ति-साधना के अनुकूल मार्ग बनाओ और उस पर तुम स्वयं चलो। भारतीय परम्परा में शिक्षक यह कामना करता है कि वह जितना जानता है उससे अधिक उसका शिष्य जाने। उसके शिष्य के अधिगम का रास्ता और व्यापक हो एवं उसकी विद्या में अभिवृद्धि हो।12 इसी अर्थ में भारतीय शिक्षा प्रणाली गुरु को ही एक संस्था मानती है। दार्शनिक सर्जनात्मकता एवं लेखन कार्य में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। भारतीय दर्शन को उसकी परम्परा से सम्बद्ध रखते हुए उन्होंने इसे नवीन दृष्टि प्रदान की, जिसमें अद्वैत वेदान्त एवं पाश्चात्य निरपेक्ष अध्यात्मवाद का पूर्ण समन्वय देखने को मिलता है। सत के स्वरूप को आध्यात्मिक या अभौतिक मानने के कारण वे अध्यात्म वादी कहे जाते हैं। क्योंकि वे इस विचार पर बल देते रहे कि जगत प्रक्रिया से कुछ प्रयोजन सिद्ध होता है, यह प्रक्रिया सतत किसी लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रही है इसलिए उन्हें आदर्शवादी भी कहा जाता है।13 डॉ.राधाकृष्णन जी अपने लक्ष्य की प्राप्ति में

हमेशा लगे रहे। उन्होंने राजनीति में रहते हुए भी हमेशा शिक्षा की चिंता की है।

डॉ.राधाकृष्णन एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें विभिन्नताओं के रहते हुए सामाजिक एकता हो। इसके लिए वे समाज के रूपान्तरण पर बल देते हैं। इसके लिए वे छात्रों को सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन के लिए प्रशिक्षण देने पर बल नहीं देते वरन् उसके सुधार पर बल देते हैं। डॉ०राधाकृष्णन सामाजिक रूपान्तरण के लिये सत्य की खोज तथा सामाजिक उन्नति के कार्यों के रूप में शिक्षा की कल्पना करते हैं जिससे एक सभ्यता का निर्माण किया जा सके।

डॉ.राधाकृष्णन ने शिक्षण विधियों के निर्धारण में शिक्षक की भूमिका को महत्त्वपूर्ण माना है। शिक्षक विषय-वस्तु तथा छात्रों की आवश्यकता के अनुसार इसका निर्धारण करे। शिक्षक विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर छात्रों के मन-मस्तिष्क को ढालने के लिए विधियों का निर्धारण करे जिससे वह उनको भविष्य की चुनौतियों को झेलने में समर्थ बना सके। उन्होंने पठन, चिन्तन-मनन, व्याख्यान, लिखित कार्य, ट्यूटोरियल आदि पर बल दिया। डॉ०राधाकृष्णन छात्र को मशीनी आदमी बनाने की अपेक्षा चिन्तनशील, निर्णयशील तथा क्रियाशील बनाना चाहते हैं। पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में उन्होंने कहा था कि किसी विश्वविद्यालय की महानता या गरिमा का निर्धारण उसकी इमारतों या उपकरणों से नहीं होता, बल्कि कार्यरत अध्यापकों की विद्वत्ता या चरित्र से निर्धारित होता है। अध्यापकों से वे आशा करते हैं कि वे अपना चरित्र आदर्श रखें क्योंकि विद्यार्थी अध्यापकों के चरित्र का अनुकरण करते हैं। वे अपने चरित्र के द्वारा अनेक विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण करते हैं, क्योंकि विद्यार्थियों के लिए उसका महत्त्व उतना नहीं जो वे पढ़ाते हैं जितना उसका है जो वे हैं। प्राचीन परम्परा पर बल देते हुए उन्होंने एक बार अध्यापकों से कहा था उन्हें याद रखना चाहिए कि हम देश में अध्यापकों को गुरु या आचार्य कहते हैं। आचार्य से तात्पर्य ही उस व्यक्ति से जिसका आचरण उच्च हो। इसलिए सबसे अधिक बल वे अध्यापकों के आचरण पर देते हैं। इसके साथ-साथ उनका यह भी कथन है कि शिक्षकों को ज्ञानी, जिज्ञासु, अपने छात्रों से स्नेह रखने वाला होना चाहिए। इन गुणों के आधार पर ही वे शिक्षक की वास्तविक भूमिका अदा कर पायेंगे। यदि वे वास्तव में आधुनिक भारत के राष्ट्र निर्माता होना चाहते हैं, तो सबसे पहले उन्हें प्रगतिशील विचारों और आधुनिक दृष्टिकोण को अपनाना होगा, तभी वे विद्यार्थियों के जीवन में प्रवेश कर पाएंगे।

संदर्भ सूची :

1. डॉ.राधाकृष्णन, सर्वपल्ली, सत्य की खोज, (प्रसिद्ध पुस्तक 'रिकवरी ऑफ फेथ' का प्रामाणिक अनुवाद), राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली, संस्करण-2011, पृ. प्रकाशकीय
2. पाण्डेय डॉ.पृथ्वीनाथ, भारतीय चिन्तक, उमेश प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण-1999, पृ.22
3. शर्मा, हरेन्द्र कुमार एवं पण्डया, डॉ.कौशिक वी., डॉ०राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सार्थकता का अध्ययन [International Journal of Creative Reasearch Thoughts (IJCRT) VOL.11, Issue 03) March 2023, Page-760
4. डॉ.राधाकृष्णन, सर्वपल्ली, सत्य की खोज, (प्रसिद्ध पुस्तक 'रिकवरी ऑफ फेथ का प्रामाणिक अनुवाद) राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली, संस्करण-2011, पृ.133

5. शर्मा, रमेश कुमार, जीवन सूक्ति कोश, जय भारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-2003, पृ.184
6. वही, पृ.184
7. डॉ.राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (अनुवादक-शर्मा सालिगराम), शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी लिमिटेड आगरा, संस्करण प्रथम बार-1948, पृ. 38 -39
8. गाँधी, मोहनदास करमचंद, सत्य के प्रयोग (आत्मकथा), नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद, पुनर्मुद्रण–अक्तूबर 1994, पृ.296-297
9. मोदी, अमृत, डॉ.राधाकृष्णन (राष्ट्रीय जीवनचरित्र ग्रंथावली गुजराती), आदर्श प्रकाशन अहमदाबाद, द्वितीय आवृत्ति 2000, पृ.17, 18, 20, 21
10. गाँधी, मोहनदास करमचंद, सत्य के प्रयोग (आत्मकथा), नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद, पुनर्मुद्रण–अक्तूबर 1994, पृ.295
11. जे.कृष्णमूर्ति, शिक्षा क्या है ? राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली, आवृत्ति 2011, पृ.295
12. तिवारी, डॉ.संजय कुमार, भारतीय परंपरा में शिक्षा व्यवस्था-पं.विद्यानिवास मिश्र की दृष्टि में (International Reasearch Journal of Human Resources and social Sciences VOL.03, Issue 07) July 2016, Page-138
13. श्रीवास्तव, वैशाली, मिश्रा, डॉ.श्रुति, डॉ.राधाकृष्णन के दर्शन में अंतर्दृष्टि का स्वरूप, Issue 24, July 2022, Page-113